साप्ताहिक
# जागत गांव हमार
पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक
RNI-MPHIN/2015/72544
चौपाल से भोपाल तक
भोपाल, सोमवार 6-12 फरवरी, 2023, वर्ष-8, अंक-43
भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित
पृष्ठ :-8, मूल्य :- 2 रुपए

### देश का हर दूसरा किसान कर्जदार, मप्र में कमाई सिर्फ 8 हजार

# मध्यप्रदेश के हर किसान परिवार पर 72.5 हजार रुपए का कर्ज

**10218** रुपए देश के किसान परिवारों की औसत मासिक आय

**8339** रुपए मप्र के किसान परिवारों की औसत मासिक आय

**29348** रुपए मासिक आय के साथ मेघालय के किसान देश में टॉप पर

**4895** रुपए मासिक आय के साथ झारखंड के किसान देश में फिसड्डी

जागत गांव हमार, भोपाल।

देश में हर किसान परिवार औसतन 74,121 रुपए के कर्ज तले दबा है। एक रिपोर्ट के अनुसार देश का हर दूसरा किसान कर्जदार है। केंद्र सरकार के मुताबिक कर्ज के लिहाज से आंध्रप्रदेश 2.45 लाख रुपए प्रति किसान परिवार कर्ज के साथ देश में सबसे ऊपर है। जबकि केरल (2.42 लाख रुपए प्रति परिवार) दूसरे और पंजाब (2.03 लाख रुपए प्रति परिवार) तीसरे नंबर पर है। वहीं, सबसे कम कर्ज की बात करें तो नागालैंड में 1,750 रुपए के साथ किसान परिवारों की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर है। इसके बाद मेघालय (2,237 रुपए प्रति परिवार) और अरुणाचल प्रदेश (3,581 रुपए प्रति परिवार) दूसरे और तीसरे नंबर पर आते हैं। इस सूची में मध्यप्रदेश 11वें पायदान पर है। यहां प्रत्येक किसान परिवार पर औसतन 74.5 हजार रुपए का कर्ज बकाया है।

**बजट से उम्मीद-** मध्यप्रदेश में एक से तीन एकड़ जमीन वाले 70 फीसदी किसान हैं। इनकी आय बढ़ाने के लिए शिवराज सरकार 2022-23 के बजट में नई योजना लाने पर विचार कर रही है। वहीं पुरानी बंद योजनाओं को शुरू भी कर सकती है। मुख्यमंत्री का पूरा फोकस किसानों को आत्मनिर्भर बनाने पर है।

» देश का हर किसान परिवार औसतन 74,121 रुपए का कर्जदार

» मप्र में किसान परिवारों की औसत मासिक आय 08 हजार

» मध्यप्रदेश छोड़ देश के 25 राज्यों के किसान हमसे बेहतर

» मप्र किसानों की आय के मामले में देश में 26वें स्थान पर

#### कर्जमाफी की स्थिति

मध्यप्रदेश में दिसंबर 2018 तक 27 लाख किसानों का 2 लाख रुपए तक का 11600 करोड़ रुपए का कर्ज माफ किया गया। कर्जमाफी के दायरे में 38 लाख किसान हैं। 11 लाख किसानों की कार्जमाफी होना बाकी है। जिसके लिए 3 हजार करोड़ रुपए का प्रावधान 2020-21 के बजट में किया गया, जो अब तक नहीं हुई है।

#### केंद्र ने 15 साल से नहीं की कर्जमाफी

यहां सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि केंद्र सरकार ने 2008-09 में किसानों का कर्ज माफ किया। तब से अब तक यानी 15 साल से किसानों की कर्जमाफी से जुड़ी कोई भी योजना नहीं बनी है। इससे किसानों में नाराजगी भी देखी जा रही है।

#### प्रमुख राज्यों में किसानों की आय

| राज्य | मासिक आय |
|---|---|
| पंजाब | 26,700 |
| हरियाणा | 22,841 |
| राजस्थान | 12,520 |
| छत्तीसगढ़ | 9,667 |
| मध्यप्रदेश | 8,339 |
| बिहार | 7,542 |
| झारखंड | 4,895 |

#### प्रमुख राज्यों में किसानों पर कर्ज

| राज्य | कर्ज |
|---|---|
| पंजाब | 203 |
| हरियाणा | 182 |
| राजस्थान | 113 |
| मध्यप्रदेश | 74.42 |
| बिहार | 23.53 |
| छत्तीसगढ़ | 21.44 |
| झारखंड | 8.41 |

नोट-आंकड़े हजार में

### जांच के लिए एक नोडल अधिकारी तैनात

# भोपाल की गौशाला से दो हजार गाय गायब

जागत गांव हमार, भोपाल।

राजधानी की सबसे बड़ी गौशाला से एक साल में 2131 गाय गायब हो गईं। नगर निगम और पशु पालन विभाग का सरकारी रिकॉर्ड यही बता रहा हैं। दरअसल, भोपाल नगर निगम शहर से जो भी गाय पकड़ता है, अधिकांश को भदभदा स्थित जीवदया गौशाला भेज देता है। गौशाला में जनवरी 2022 में 1961 गाय थीं। इसकी पुष्टि खुद विभाग ने की है। जबकि नगर निगम ने सालभर में यहां 2236 गाय भेजीं। इनमें से 116 गाय की मौत हो गई। मौजूद रिकॉर्ड के हिसाब से फिर भी गौशाला में 4081 होनी चाहिए थी, लेकिन यहां अभी 1950 गाय होना दर्ज है। फिर बाकी 2131 गाय कहां गायब हो गईं। जबकि गौशाला गायों की संख्या की जानकारी हर महीने पशु पालन विभाग को देती है। गायों की असल संख्या जानने के लिए 'जागत गांव हमार' टीम भी गौशाला पहुंची। लेकिन यहां मौके पर 500 गाय ही मिलीं। जीवदया गौशाला के प्रबंधक से जब गायों के गायब होने का सवाल पूछा गया तो उन्होंने सिर्फ इतना कहा कि गाय चरने के लिए जंगल जाती हैं। इनके साथ पांच कर्मचारी होते हैं, लेकिन कई बार वे सड़क पकड़कर निकल जाती हैं, इसलिए संख्या में अंतर हो सकता है।

#### 2022 में जीवदया गौशाला में गायों की संख्या

| महीना | गाय | मौत | ननि ने भेजी |
|---|---|---|---|
| जनवरी | 1961 | 11 | 188 |
| फरवरी | 1961 | 08 | 36 |
| मार्च | 1942 | 12 | 165 |
| अप्रैल | 1947 | 00 | 149 |
| मई | 1930 | 08 | 172 |
| जून | 1941 | 09 | 136 |
| जुलाई | 1933 | 11 | 249 |
| अगस्त | 1560 | 09 | 272 |
| सितंबर | 1785 | 09 | 309 |
| अक्टूबर | 1580 | 18 | 192 |
| नवंबर | 1870 | 09 | 118 |
| दिसंबर | 1950 | 12 | 250 |

नोटे-जानकारी पशु पालन विभाग और ननि के मुताबिक।

#### अंदर का हाल डरावना

गौशाला के अंदर का हाल डरावना था। यहां दो बाड़े बने हैं। दिनभर गायों को ओपन बाड़े में रखते हैं, जहां ट्रैक्टर से सूखी घास डाली जाती है। रात में इन्हें टीन शेड वाले बाड़े में रखा जाता है। ओपन बाड़े में गोबर का एक-एक फीट का कीचड़ भरा है। जहां गाय पानी पीती हैं, उस टंकी में कीड़े और काई जमी है। जगह-जगह पानी भरा हुआ था।

#### हर दिन तीन की मौत

गौशाला के कर्मचारी ने बताया कि कई बार गाय पानी पी नहीं पातीं। भूख-प्यास से तड़पकर दम तोड़ देती हैं। बहुत बुरा लगता है, लेकिन हम क्या कर सकते हैं। गौशाला से 300 मीटर दूर गायों के अनगिनत कंकाल पड़े थे। यहां कंकाल से खाल उतार रहे दो कर्मचारियों ने बताया कि हर रोज दो

- गौशाला वाले जो संख्या भेजते हैं उसको नोडल अधिकारी सत्यापित करते हैं। जीवदया गौशाला में गायों की संख्या में अंतर आ रहा है तो टीम बनाकर जांच की जाएगी। -डॉ. अजय रामटेके, उपसंचालक, पशु चिकित्सा सेवाएं
- जीवदया गौशाला से न सिर्फ गायों की हड्डी और चमड़े का कारोबार किया जा रहा है, बल्कि यहां से गायों को बाहर बेचा भी जाता है। - गौरव मिश्रा, प्रदेशाध्यक्ष ,अभास गौरक्षा महाभियान समिति

### मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने विकास कार्यों की दी सौगात, लाड़ली बहना योजना के लिए जमा होंगे आवेदन

# 80 लाख किसानों के खाते में डाली किसान कल्याण की राशि

जागत गांव हमार, भोपाल।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने विदिशा में नर्मदा जयंती के दिन घोषित लाड़ली बहना योजना का स्वरूप उजागर किया। उन्होंने कहा कि इस योजना का लाभ माध्यम और निम्न आय वर्ग की महिलाओं को दिया जाएगा। इसमें प्रदेश की एक करोड़ महिलाएं लाभान्वित होगी। इस योजना के लिए अगले माह आठ मार्च से आवेदन जमा होंगे। इसके दो माह बाद योजना के तहत चयनित महिला के बैंक खाते में एक हजार रुपए महीना जमा किया जाएगा। राज्य सरकार लाड़ली बहना योजना पर प्रति वर्ष 12 हजार रुपए खर्च करेगी। सीएम नवीन कृषि मंडी परिसर में आयोजित सीएम जनसेवा अभियान के संभाग स्तरीय स्वीकृति पत्र वितरण कार्यक्रम में बोल रहे थे। मुख्यमंत्री चौहान ने कहा कि लाड़ली बहना योजना प्रदेश की महिलाओं की जिंदगी बदल देगी। इस योजना में आयकर दाता परिवारों और पांच एकड़ से अधिक जमीन वाले किसानों को छोड़कर सभी वर्गों की महिलाओं को लाभान्वित किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में कांग्रेस ने सवा साल के कार्यकाल में गरीब कल्याण की कई योजनाएं बंद कर दी। सीएम कन्यादान योजना के तहत बेटियों का पैसा हजम कर लिया, लेकिन भाजपा की सरकार आते ही इन योजनाओं को फिर शुरू किया गया है।

#### किसानों के खातों में जमा की राशि

सीएम ने मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना के तहत प्रदेश के 73 लाख किसानों के बैंक खाते में 1465 करोड़ रुपए की राशि सिंगल क्लिक से जमा की। इस दौरान उन्होंने सीएम जनसेवा अभियान के तहत लाभार्थियों को स्वीकृति प्रमाणपत्र भी भेंट किए। कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर भी दिल्ली से वर्चुअली जुड़े। उन्होंने मुख्यमंत्री की प्रशंसा करते हुए उन्हें प्रदेश की तस्वीर बदलने वाला बताया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने बीमारू राज्य को विकसित राज्य की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया है।

-तंजानिया से आए अतिथियों को पसंद आई झीलों की नगरी, बोले

# किसानों के कल्याण में मध्यप्रदेश की कोशिशें तारीफ के काबिल हैं

## मुख्यमंत्री शिवरा ने दिया जन-कल्याणकारी कार्यों का ब्यौरा, दी योजनाओं की जानकारी

जागत गांव हमार, भोपाल।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से निवास पर समत्व भवन में भारत यात्रा पर आए तंजानिया के शिष्टमंडल ने भेंट की। मुख्यमंत्री ने अतिथियों को मध्यप्रदेश की विशेषताओं, क्रियान्वित जन-कल्याणकारी योजनाओं और उपलब्धियों की जानकारी दी। जिन लोगों ने मुख्यमंत्री से भेंट की उनमें अब्दुल रहमान किनाना प्रमुख हैं, जो 25 से 30 जनवरी 2023 तक भारत यात्रा पर आए 5 सदस्यीय सीसीएम प्रतिनिधि-मंडल का नेतृत्व कर रहे हैं। किनाना, तंजानिया की शक्तिशाली सत्ताधारी पार्टी सीसीएम के उपाध्यक्ष हैं, जो वर्ष 1961 में आजादी के बाद से सत्ता में हैं। अन्य सदस्यों में संसदीय समिति के सदस्य अब्दुल्ला म्वीनी, मसाफिरी विल्बर्ट, थाडेओ बुरटन और सलुम बकारी सूमा शामिल हैं। प्रतिनिधि मंडल के प्रमुख किनाना ने कहा कि मध्यप्रदेश में किसानों और महिलाओं के कल्याण के लिए किए गए कार्य तारीफे काबिल हैं। मुख्यमंत्री ने शिष्टमंडल के सदस्यों को पुस्तकें और उपहार भेंट किए।

**संबंधों को प्रगाढ़ बनाने के प्रयास** - मुख्यमंत्री ने प्रतिनिधि-मंडल का स्वागत करते हुए कहा कि भोपाल झीलों का शहर है। भारत में तंजानिया के प्रतिनिधि-मंडल का आगमन संपूर्ण विश्व के लिए अच्छी पहल है। भारत और तंजानिया के मध्य सद्भावना का सिलसिला पुराना है। तंजानिया में भारतीय मूल के 50 हजार से अधिक लोग रहते हैं। द्विपक्षीय संबंधों को प्रगाढ़ बनाने के लिए विशेष प्रयास हो रहे हैं। दोनों देशों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में बहुआयामी संबंधों को साझा किया जाता है।

### जन-भागीदारी को बढ़ावा दिया

मुख्यमंत्री ने बताया कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश में नई शिक्षा नीति में अनुसंधान पर जोर दिया गया है। अनेक स्टार्टअप्स प्रारंभ हुए हैं। मध्यप्रदेश भी इस क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। खेलो इंडिया की गतिविधियाँ मध्यप्रदेश में भी हो रही हैं। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत को जी-20 की अध्यक्षता मिलना गर्व का विषय है। मनुष्य को प्रसन्नता का वातावरण उपलब्ध करवाने का कार्य किया जा रहा है। लोगों को योजनाओं का आवश्यक लाभ दिलवाने और स्वच्छता जैसे कार्यों में जन-भागीदारी को बढ़ावा दिया गया है। मप्र, प्रधानमंत्री के संकल्प के अनुरूप विभिन्न क्षेत्रों में सक्रियता से कार्य कर रहा है।

### किसानों को शून्य प्रतिशत ब्याज पर कर्ज

मध्यप्रदेश में किसानों को शून्य प्रतिशत ब्याज पर कर्ज उपलब्ध करवा कर कृषि लागत घटाने का कार्य किया गया है। किसानों को सिंचाई और बिजली की सुविधाएं देते हुए उनकी उपज के ठीक दाम दिलवाने और न्यूनतम समर्थन मूल्य का लाभ दिलवाने का कार्य किया गया है। साथ ही फसलों के नुकसान पर सहायता राशि भी प्रदान की जाती है। मध्यप्रदेश में ग्राम सभाओं को सशक्त बनाया गया है। विभिन्न 14 मापदंड बनाए गए हैं।

### सिंचाई, बिजली, पेयजल की व्यवस्थाएं मजबूत

मुख्यमंत्री ने बताया कि मध्यप्रदेश में पं. दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन के अनुरूप योजनाओं को लागू किया है। गरीब कल्याण को प्राथमिकता दी गई है। सड़क, सिंचाई, बिजली, पेयजल की व्यवस्थाएं मजबूत बनाई गई। बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओ अभियान के साथ ही आँगनवाड़ियों को एडाप्ट करने, पौधे लगाने और आनंद विभाग से विभिन्न गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है। यहां के नागरिक संग्रह में विश्वास न कर उपयोग में न आने वाली वस्तुएं और वस्त्र इत्यादि अन्य जरूरतमंद लोगों को प्रदान कर देते हैं।

### जननी को मिल रही संबल राशि

लाड़ली लक्ष्मी योजना के बाद लाड़ली बहना योजना लागू की जा रही है, जिसमें परिवार की महिला को प्रतिमाह एक हजार रुपए प्रदान करने का कार्य किया जाएगा। संबल योजना के हितग्राही, बच्चों के लिए शिक्षण शुल्क और उपचार सहायता प्राप्त करते हैं। महिला को प्रसव के लिए 16 हजार की राशि संबल योजना में दी जाती है। प्रदेश में औद्योगिकीकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है।

### प्राकृतिक सुंदरता बहुत पसंद आई

मुख्यमंत्री से भेंट करने के बाद प्रतिनिधि-मंडल के सदस्य काफी प्रसन्न थे। भोपाल की झील (भोजताल) का दृश्य देख कर प्रतिनिधि-मंडल के सदस्य काफी प्रभावित हुए। उन्हें मप्र की मसाला-टी भी पसंद आई। मेहमानों ने मध्यप्रदेश में लागू की गई योजनाओं को महत्वपूर्ण बताया। सदस्यों ने मुख्यमंत्री द्वारा लाड़ली लक्ष्मी योजना के संबंध में दी गई जानकारी की प्रशंसा की। विजय चौथाईवाले ने समन्वयक की भूमिका निभाते हुए शिष्ट मंडल के भारत आगमन, विभिन्न स्थानों की यात्रा और उद्देश्यों की जानकारी दी।

मध्यप्रदेश में एक से 15 फरवरी तक चलेगी प्रतियोगिता

# छह लीटर तक दूध देने वाली गायों के मालिकों को मिलेगा पुरस्कार

### 45 मप्र के मूल गौवंशीय, 156 भारतीय उन्नत नस्ल

### -पालकों को छह राज्य स्तरीय पुरस्कार भी दिए जाएंगे

जागत गांव हमार, भोपाल

गो पालन को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार ने पुरस्कार योजना शुरू की है। इसमें मध्य प्रदेश और अन्य प्रदेशों में पाई जाने वाली विभिन्न नस्ल की गायों के पालक शामिल होंगे। एक से 15 फरवरी तक चलने वाली इस प्रतियोगिता में चार से छह लीटर दूध देने वाली गायों के पालकों को पुरस्कृत किया जाएगा। उन्हें जिला स्तर पर 11 से 51 हजार और राज्य स्तर पर 50 हजार से दो लाख रुपये तक का पुरस्कार दिया जाएगा। प्रतियोगिता में प्रदेश की मूल और भारतीय उन्नत नस्ल की गाय शामिल हो सकेंगी। दोनों की प्रतियोगिताएं अलग-अलग होंगी। प्रतियोगिता में 201 जिला स्तरीय पुरस्कार दिए जाएंगे। इनमें से 45 मध्य प्रदेश के मूल गोवंशीय एवं 156 भारतीय उन्नत नस्ल की गायों के लिए होंगे। छह राज्य स्तरीय पुरस्कार भी दिए जाएंगे। प्रदेश की मूल गोवंशीय नस्ल की गायों की प्रतियोगिता आगर-मालवा, शाजापुर, राजगढ़, उज्जैन, इंदौर, खंडवा, खरगोन, बुरहानपुर, बड़वानी, धार, दमोह, पन्ना, टीकमगढ़, छतरपुर और निवाड़ी में आयोजित होगी। जबकि, भारतीय उन्नत नस्ल की गायों की प्रतियोगिता सभी 52 जिलों में होगी।

### तीन श्रेणी में पुरस्कार

प्रदेश की मूल गौवंशीय नस्ल-मालवी, निवाड़ी और केनकथा गाय का प्रतिदिन दूध उत्पादन चार लीटर या अधिक और भारतीय गाय का छह लीटर या उससे अधिक होना चाहिए। दोनों प्रतियोगिताओं में जिला स्तरीय प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार क्रमशः 51 हजार, 21 हजार और 11 हजार रुपए होगा। इसी तरह राज्य स्तरीय पुरस्कार भी क्रमशः दो लाख, एक लाख और 50 हजार रुपए का होगा।

पशु पालकों को आवेदन करना होगा। मुख्यमंत्री पशुपालन विकास योजना में शामिल होने के इच्छुक पशु पालकों से विभाग का अमला विकास खंड स्तर पर आवेदन लेगा। पुरस्कार प्राप्त गायों के अलावा अन्य गायों को प्रमाण पत्र दिए जाएंगे।
**प्रेम सिंह पटेल, पुशपालन मंत्री**

-डॉ.एसपी सिंह बोले-भिंड में बढ़ाना होगा ज्वार-बाजरा का रकबा

# मोटे अनाजों में छुपा पोषण का खजाना

### केवीके किसानों के बीच जिले में चला रहा जागरूकता कार्यक्रम

जागत गांव हमार, लहार।

भारत सरकार की पहल पर वर्ष 2023 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष (इंटरनेशनल ईयर आफ मिलेट्स) के रूप में घोषित किया गया है। अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स ईयर के चलते पूरे विश्व में मोटे अनाजों के प्रति किसानों और आम नागरिकों में जागरूकता पैदा की जा रही है। इसी क्रम में भिंड जिले के कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा चुरली, बरउआ और खजूरी गावों में जाकर मोटे अनाजों की खेती के प्रति किसानों को जागरूक किया गया। इस अवसर पर केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एसपी सिंह ने कहा कि भारत में मोटे अनाज वह भूले बिसरे अनाज हैं, जिनको किसानों द्वारा भुला दिया गया था अब एक बार पुनः किसानों को अपने खेतों में मोटे अनाजों को उगाने के प्रति जागरूक किया जा रहा है, जिससे मोटे अनाज खेत से लेकर आम आदमी की थाली में आ सके।

### किसानों को आना होगा आगे

डॉ. सिंह ने बताया कि मोटे अनाजों की खेती कम उपजाऊ, सूखा की स्थिति एवं बदलती जलवायु परिवर्तन में आसानी से की जा सकती है। मोटे अनाजों की खेती में लागत कम आती है। उनकी फसलों में कीटनाशकों के प्रयोग की जरूरत भी काफी कम होती है। इसलिए जिले के किसानों को मोटे अनाजों की खेती करने के लिए आगे आना होगा।

### असीम संभावनाएं

जिले में बाजरा और ज्वार की खेती का क्षेत्रफल एवं उत्पादन बढ़ाए जाने की असीम संभावनाएं हैं। इस अवसर पर केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अवधेश सिंह और डॉ. उपेंद्र कुमार द्वारा भी किसानों को मोटे अनाजों की खेती के बारे में जानकारी प्रदान की गई।

### मोटे अनाज भविष्य का अनाज

मोटे अनाज स्वास्थ्य और पोषण की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं। मोटे अनाज भविष्य का अनाज हैं। भारत में बाजरा, ज्वार, सवा, कुटकी, कोदो, रागी, कंगनी, चीना, कुट्टू एवं चौलाई प्रमुख मोटे अनाज हैं। मोटे अनाजों में प्रोटीन, विटामिंस, खनिज एवं फाइबर प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। भिंड जिले में भी बाजरा और ज्वार की खेती किसानों द्वारा की जाती है। जिसका क्षेत्रफल और उत्पादन और बढ़ाए जाने की जरूरत है।

## किसानों के लिए कृषक समाधान योजना होगी लागू, बजट में शिवराज सिंह चौहान सरकार करेगी घोषणा

### याजना में सिर्फ डिफाल्टर किसानों को ही शामिल किया जाएगा

# प्रदेश के 10 लाख किसानों को फिर ब्याज रहित ऋण मिलेगा

जागत गांव हमार, भोपाल।

मध्य प्रदेश के 10 लाख से ज्यादा किसानों को अगले वित्तीय वर्ष से फिर ब्याज रहित ऋण मिलेगा। इसके लिए शिवराज सरकार कृषक समाधान योजना लागू करने जा रही है। मार्च में प्रस्तुत होने वाले वर्ष 2023-24 के बजट में इसकी घोषणा होगी। इसमें समय पर ऋण न चुकाने के कारण डिफाल्टर हुए किसानों को ही शामिल किया जाएगा। इसके बाद इन्हें सहकारी समितियों से फिर ब्याज रहित कृषि ऋण, खाद-बीज मिलने लगेगा। योजन पर एक हजार करोड़ रुपए के व्यय का अनुमान है। वर्ष 2018 में कमल नाथ सरकार ने किसान ऋण माफी योजना लागू की थी। इसमें सहकारी समितियों के ऋणी किसानों को दो लाख रुपये तक ऋण माफ करने का प्रविधान था। योजना के पहले चरण में चालू खाते पर पचास हजार और दो लाख रुपए तक के कालातीत ऋण को माफ किया गया।

**अल्पमत में सरकार चली गई थी-** दूसरे चरण में चालू खाते पर एक लाख रुपए की ऋण माफी का प्रावधान था। इसकी प्रक्रिया प्रारंभ हुई ही थी और मार्च 2020 में अल्पमत में आने के कारण कांग्रेस सरकार चली गई और योजना ठप हो गई। इसके कारण लाखों किसान डिफाल्टर हो गए क्योंकि ऋण माफी की आस में इन्होंने ऋण नहीं चुकाया था। अब स्थिति यह है कि इन किसानों को सहकारी समितियों से न तो खाद-बीज मिल रहा है और न ही साख सीमा के अनुसार ऋण राशि प्राप्त हो रही है।

### शिवराज ने की ब्याज माफी की घोषणा

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने किसानों को ब्याज माफी देने की घोषणा की थी और बजट में चार सौ करोड़ रुपए का प्रावधान भी किया था, लेकिन योजना को अंतिम रूप नहीं दिया जा सका। अब नए सिरे से योजना तैयार की जा रही है।

### छतरपुर के किसान ज्यादा डिफाल्टर

सितंबर 2022 की स्थिति में चार लाख 41 हजार 840 किसान ऐसे हैं, जिनका ऋण माफ नहीं हुआ और समय पर ऋण अदायगी न करने के कारण डिफाल्टर हैं। इनमें सर्वाधिक 32 हजार 594 छतरपुर जिला सहकारी बैंक के किसान हैं।

### चार लाख से अधिक किसान होंगे शामिल

इसमें ऋण माफी योजना के चार लाख 41 हजार 840 उन किसानों को शामिल किया जाएगा, जिन्हें लाभ नहीं मिला। इसके अलावा अन्य डिफाल्टर किसानों को भी योजना से जोड़ा जाएगा। इसके लिए सभी जिला सहकारी केंद्रीय बैंकों से डिफाल्टर किसानों की जानकारी मांगी गई है। सहकारिता विभाग के अधिकारियों का कहना है कि योजना के लिए एक हजार करोड़ का बजट प्रावधान करना प्रस्तावित किया गया है।

### मूलधन चुकाने पर मिलेगी ब्याज माफी

किसानों को ब्याज माफी दी जाएगी। इसमें पहले मूलधन जमा करना होगा, इसके बाद उनका ब्याज जिला सहकारी केंद्रीय बैंकों द्वारा माफ कर दिया जाएगा। दरअसल, कई किसानों के ऊपर मूलधन से ज्यादा ब्याज हो गया है। यही कारण है कि वे ऋण भी नहीं चुका रहे हैं। योजना में किसानों को दो-तीन किस्तों में मूलधन जमा करने का अवसर मिलेगा। वहीं, बैंकों को साधारण ब्याज की दर से शासन ब्याज अनुदान देगा ताकि उनका भी नुकसान न हो।

| जिला | डिफाल्टर |
|---|---|
| छतरपुर | 32,594 |
| मंदसौर | 26,431 |
| दमोह | 20,871 |
| जबलपुर | 19,005 |
| सीहोर | 19,800 |
| सिवनी | 17,492 |
| पन्ना | 16,727 |
| रीवा | 15,888 |
| विदिशा | 14,845 |
| गुना | 14,875 |
| शिवपुरी | 14,693 |
| खंडवा | 14,156 |
| बालाघाट | 12,987 |
| रतलाम | 12,647 |
| बैतूल | 12,308 |
| टीकमगढ़ | 11,699 |
| ग्वालियर | 8,407 |
| भोपाल | 2, 407 |

## -फरवरी 2021 में नर्मदा जयंती पर लिया था संकल्प

# पौधरोपण से विश्व को जोड़ रहे शिवराज

### » कहीं भी रहें, दिन की शुरुआत पौधारोपण के साथ

जागत गांव हमार, भोपाल।

नर्मदा जयंती पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के प्रतिदिन पौधरोपण के संकल्प के दो साल पूरे हो गए। सीएम ने वर्ष 2021 में नर्मदा जयंती (19 फरवरी) पर प्रतिदिन पौधारोपण का संकल्प लिया था। वह स्वयं रोज पौधा रोपने के साथ ही दिन की शुरुआत करते हैं। यह धीरे-धीरे जन अभियान का रूप लेता जा रहा है। पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रतिदिन काम करने वाले वह देश के एकमात्र मुख्यमंत्री हैं। पौधारोपण के माध्यम से हरे-भरे मध्य प्रदेश का संदेश देते हुए शिवराज सरकार ने अंकुर अभियान का पोर्टल भी प्रारंभ किया है, जिससे 61 लाख से अधिक नागरिक जुड़े और पौधारोपण करने की जानकारी फोटो सहित दी। यह अभियान सतत जारी है।

**पौधारोपण से दिन की शुरुआत-** खास बात है कि शिवराज देश-विदेश कहीं रहें, दिन की शुरुआत पौधारोपण के साथ ही करते हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए उनका संकल्प अब कई देशों तक संदेश दे रहा है। इसकी झलक बीते दिनों इंदौर में आयोजित प्रवासी भारतीय दिवस समारोह और ग्लोबल इंवेस्टर्स समिट के दौरान भी देखने को मिली, जब विभिन्न देशों से आए मेहमानों ने ग्लोबल पार्क में एक साथ पौधारोपण किया।

### जहां देखभाल हो तो वहीं रोपते हैं पौधा

मिनट दर मिनट तय कार्यक्रमों, यात्राओं, चुनावी दौरों व कोरोना संकट काल में बेहद व्यस्त दिनचर्या के बावजूद सीएम रोज पौधारोपण कर रहे हैं। चाहे वे राजधानी भोपाल में हों, या दिल्ली या कहीं अन्य राज्य या शहर में। वह पौधा ऐसे सुरक्षित परिसर में रोपते हैं, जहां उसकी देखभाल की व्यवस्था हो सके। ऐसे पौधे ही चयन करते हैं, जो कम देखभाल में और कम वर्षों में पेड़ बन जाए।

### बन गया जनाभियान

सीएम शिवराज सिंह चौहान के अभियान को पूरे प्रदेश का साथ मिल रहा है। अब लोग अपने जन्मदिन, वैवाहिक वर्षगांठ या दिवंगत सदस्यों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए पौधारोपण को माध्यम बना रहे हैं।

### पौधे भी विशेषता वाले

पौधे भी विशेषता वाले होते हैं, जैसे औषधीय में मौलसिरी, सप्तपर्णी, आकाश नीम आदि व आक्सीजन देने वाले गुलमोहर, बरगद, आम, अशोक, बादाम, पीपल, नीम, कदंब, चंदन, कचनार, फाइकस, रुद्राक्ष, बेलपत्र, विद्या, गूलर सहित अन्य। उन्होंने गुजरात, बंगाल और केरल दौरे में भी ये क्रम जारी रखा, जिसकी वहां चर्चा रही। दांडी यात्रा के 150 साल पूरे होने पर निकाली गई यात्रा के दौरान शिवराज ने गुजरात के भरूच, मनन आश्रम में आम के पौधे रोपे। चुनावी दौरे में जब वह बंगाल, असम, केरल में तूफानी दौरे कर रहे थे, तब भी वक्त निकालकर सप्तकर्णी, नारियल, नीम, बरगद, पीपल सहित अन्य पौधे रोपे।

## प्रभारी मंत्री राज्यवर्धन ने सर्किट हाउस पर की बैठक

# प्रभावित फसलों का सर्वे करने खेतों में पहुंचा दल

जागत गांव हमार, मंदसौर।

मौसम में अचानक आए बदलाव, बेमौसम बारिश से उत्पन्न परिस्थितियों एवं फसलों में नुकसानी की सूचनाओं को लेकर मंदसौर जिला प्रशासन ने तेजी दिखाई गई है। मंदसौर में ही मौजूद प्रभारी मंत्री राजवर्धनसिंह दत्तीगांव ने सर्किट हाउस पर बैठक कर स्थितियों पर चर्चा की है। इस संबंध में विधायक यशपाल सिंह सिसोदिया ने बताया कि बारिश से फसलों को जिले भर में हुए नुकसान की सूचनाओं पर तत्काल बैठक हुई। प्रभारी मंत्री दत्तीगांव ने कलेक्टर गौतम सिंह से जिले की स्थिति की जानकारी ली। बैठक में उनके साथ ही भाजपा जिलाध्यक्ष नानालाल अटोलिया, सहित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

### सर्वे की मानिटरिंग

बैठक में जिले की स्थिति को देखते हुए प्रभारी मंत्री को कलेक्टर ने अवगत करवाया कि सर्वे दल गठित कर दिए गए हैं। एसडीएम, तहसीलदार सहित अन्य अधिकारियों को मैदान में भेजा गया है, जहां जहां नुकसानी की सूचनाएं हैं, वहां सर्वे हेतु टीम भेजी जा रही है। वीडियो कांफ्रेंसिंग से सर्वे की मानिटरिंग भी की जाएगी।

### फसल नुकसानी का सर्वे

**सीतामऊ क्षेत्र में बारिश और ओलावृष्टि के चलते किसानों की फसलों को नुकसानी के आंकलन का काम राजस्व विभाग ने शुरू कर दिया है। सीतामऊ राजस्व विभाग के सभी अधिकारी अपने अधीनस्थ क्षेत्रो में जाकर सर्वे कर रहे हैं। राजस्व विभाग की टीम बारिश से प्रभावित खेतों पर जाकर फसलों की नुकसानी का आंकलन कर रिपोर्ट तैयार कर रही है। प्रशासन के प्रयास है कि जल्द से जल्द किसानों की नुकसानी का आंकलन कर सरकार के समक्ष प्रस्तुत कर दिया जाए।**

# प्रसार प्रणाली का विश्लेषणात्मक अध्ययन जरूरी

» डा. रूचि सिंह
» डा. रश्मि विश्वकर्मा
» डा. प्रतीक्षम ठमकुर
» डा. सौरभ शर्मा

नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, जबलपुर, मप्र

विश्व में कृषि व पशुपालन के परिवर्तित परिदृष्य को देखते हुए भारत सरकार द्वारा अनेकों नई नीतियों जैसे की मेरा गांव मेरा गौरव, किसान प्रथम, आर्या इत्यादि की घोषणाएं की जा रही हैं, जिसका मूल उददेश्य मुख्यत: कृषि विकास दर को 4: तक पहुंचाना हैं। इन सभी नितियों में प्रसार कार्यकर्ता की अत्यतं महत्वपूर्ण भूमिका है, ताकि पूर्ण प्रसार द्वारा किसानों के जीवन में सुधार, गांवों से पलायन रोकना व ग्रामीण क्षेत्रों में ही रोजगार सृजित करने के उपाय किसानों की सहभागिता द्वारा ही सृजन किए जा सके। परंतु जब हम इन तकनीकियों के स्थानातंरण की असफलताओं पर नजर डालते हैं तो सामान्यत: पाते हैं कि कारण कोई भी हो प्रसार कार्यकर्ता को स्केपीगोट अथात बलि का बकरा बनाते हुए असफलता का पूर्ण दायित्व दे दिया जाता है।

नई राष्ट्रीय नीतियों के उददेश्यों की प्राप्ति के लिए सभी किसानों, प्रसार अधिकारी, अनुसंधानकर्ता इत्यादि को अपने मानसिकता एवं काम करने की प्रवृत्ति में परिवर्तन लाना अतिआवश्यक है चूंकि नई नीतियों के साथ प्रसार कार्य करने के तरीकों में भी परिवर्तन आया है अत: इन परिवर्तनों को जानने से पहले हमें वर्तमान प्रसार व्यवस्था का जानना भी जरूरी हैं।

**वर्तमान प्रसार प्रणाली:** वर्तमान समय में अनुसंधानकर्ता, प्रयोगशाला में अनुसंधान द्वारा नई तकनीकी का विकास करते हैं और कुछ प्रयोगों के बाद उन्हें किसानों की क्षेत्रीय व्यव्स्था पर उपयोग करते हैं। इनमें से कुछ तकनीकी फील्ड में सफल व कुछ असफल होते हैं। इस प्रकार तकनीकियों की जानकारी व तकनीकियों की सफलता व असफलता व किसानों की प्रतिक्रिया वापस अनुसंधानकर्ता को दे दी जाती है। बदलते परिवेश में सुधार की भी आवष्यकता है।

**वर्तमान प्रसार प्रणाली की कमियां:** यद्यपि जब हम राज्य कृषि विश्वविद्यालय या भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के बाहर के लोगों से अपने काम के बारे में परिचर्चा करते हैं तो वह काफी प्रभावित होते हैं और सही मायने में ऐसा अनुभव करते हैं कि प्रसार कार्यकर्ता भारत के छोटे/सीमान्त/किसानों के सम्पूर्ण सामाजिक व आर्थिक उत्थान में काम कर रहें हैं। जबकि हमारे खुद के संस्थान के अधिकारी/विषयों के विशेषज्ञ हमें किसी काम का नहीं समझते हैं। प्रसार प्रणाली की हीरक जयंती के समय अब विश्लेषणात्मक अध्यन का समय आ गया है। कि हम अपनी छवि को एक विषय के रूप में साथ ही साथ प्रसार कार्य के रूप में और सुधार लाएं ताकि हमे सहयोगी वैज्ञानिक व हमारे किसान हमारे काम को समझें।

**वर्तमान प्रसार प्रणाली के अवरोध:**

**1. योजनाएं बनाने के लिए शीर्ष से जमीनी स्तर की प्रक्रिया अपनाना और किसानों की मांग व आवश्यकताओं को अनदेखा करना:** किसानों की समस्या क्या है, उनकी प्राथमिकता कौन सी है यह सभी बातें उनसे ज्यादा और कोई नहीं जान सकता है उनकी क्षेत्रीय समस्याएं, मिट्टी का प्रकार, भौगोलिक परिवश की जानकारी वह खुद ही भलि-भांति बता सकते हैं। अत: यह बहुत जरूरी है की योजनाओं का निर्माण के लिए जमीन स्तर से शीर्ष की और प्रक्रिया को अपनाया जाए।

**2. किसानों की सहभागिता में कमी:** जब हम समूह में परिचर्चा करते हैं, तब हमें किसी भी समस्या का एक स्पष्ट व सही समाधान मिलता है। यही वजह है की यदि प्रसार कार्य में किसानों, ग्रामीण नौजवानों व ग्रामीण महिलाओं की सहभागिता हो तो वह कार्यक्रम पूर्णरूपेण सफल होता है, क्योंकि इस प्रकार की योजनाओं के क्रियान्वयन से किसानों में योजनाओं के लिए अपनेपन की भावना पनपती है।

**3. दो तरफा सूचनाओं का आदान-प्रदान:** प्रसार कार्यक्रम में स्थानांतरण के बाद वहां की प्रतिक्रिया भी शीर्ष संस्थान तक पहुंचाना अतिआवश्यक है, अन्यथा ग्रामीण परिवेष में परिवर्तन लाना कठिन है।

**4. प्रसार प्रणाली का मूल उददेश्य उत्पादन में बढ़ोत्तरी होना:** वर्तमान समय में प्रसार कार्य का मूल उददेश्य कृषि व पशुपालन उत्पादन बढ़ाना है। आज के परिप्रेक्ष्य में प्रसार कार्य उत्पादन से लेकर उसके सही मूल्य में विपणन तक होना चाहिए ताकि किसानों को अपने उत्पाद का उचित मूल्य मिल सकें।

**5. प्रसार कार्यकर्ताओं की कमी:** वर्तमान में लगभग एक हजार किसानों पर एक प्रसार कार्यकर्ता काम करता है जबकि यह अनुपात 300-400 किसानों पर एक प्रसार कार्यकर्ता होना चाहिए। इसके साथ ही प्रसार कार्य अधिकारी को सिर्फ प्रसार कार्य न देकर अन्य कार्यों का जिम्मा भी सौंपा जाता हैं। जिससे प्रसार कार्य प्रभावित होते हैं।

**आधुनिक प्रसार प्रणाली**

सूचना व संचार तकनीकी के युग में प्रसार प्रणाली में भी परिवर्तन करना आवश्यक है। जिससे की प्रसार प्रणाली अधिक प्रभावशाली व तीव्रगाति बन सके। अत: नई प्रसार प्रणाली में निम्न बिन्दुओं को सम्मिलित किया गया है।

**1. ग्रामीणों को सहगभागी बनाना:** वर्तमान में ग्रामीण समुदाय की सहभागिता व शीघ्र ग्रामीण परिवेश मूल्यांकन विधियों द्वारा ग्रामीणों को प्रत्येक योजना व कार्यक्रमों में सहभागी बनाया जा रहा है इस प्रकार वैज्ञानिक गैर सरकारी संगठन, बैंक, एवं सरकार एक साथ मिलकर योजनाएं के निर्माण से लेकर उनके क्रियान्वयन तक सम्मिलित हैं।

**2.** तकनीकियों के स्थानांतरण के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, कृषि प्रौधोगिकी सूचना केन्द्र, कृषि प्रौधोगिकी प्रबंधन एंजेसी इत्यादि के द्वारा अनुसंधान व प्रसार कार्य के मध्य अनुबंध मजबूत किया जा रहा है ताकि नई तकनीकियों का स्थानांतरण शीध्र व प्रतिक्रिया शीघ्र प्राप्त हो सके। इसके अलावा कृषि व पशुपालन में छोटे उधमियों के विकास के लिए कई कार्यक्रम भी चलाए जा रहें हैं। ताकि वह स्वावलम्बी बन दश की उन्नति में हाथ बढ़ाएं। निजी संगठनों व कम्पिनयों के प्रसार कार्यकर्ताओं को भी प्रसार कार्य पर प्रशिक्षण दिया जा रहा हैं।

**3.** प्रसार प्रणाली का उत्पादन बढ़ाने जैसे मूलभूत उददेश्य के साथ इन उत्पादों के विपणन पर भी ध्यान देना होगा-कृषि व पशुपालन से संबधित उत्पादों की स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार की मांग को ध्यान रखते हुए किसानों को फसलों की खेती व पशुपालन के लिए बढ़ावा दिया जाए ताकि वह अपने उत्पादों का उचित मूल्य प्राप्त कर सकें।

4. नवीन प्रसार प्रणाली में किसानों ग्रामीण महिलाओं आदि के सशक्तिकरण पर ध्यान दिया जा रहा है। इसके लिए विभिन्न श्रेणियों के किसान जैसे की फसल, उत्पादक, पशुपालक, मूल्य उत्पादक, मुर्गी पालक, इत्यादि के संगठन बनाए जा रहें हैं ताकि वह देखकर कर सीखे व उसे अपनाएं। इस प्रकार पूर्णज्ञ: सफल प्रसार कार्यों के लिए किसानों, सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं को, सबंधित विभागों के पदाधिकारियों को, प्रसार प्रणाली में हो रहे परिवर्तनों से परिचित कराना आवश्यक होगा क्योंकि निकट भविष्य में देश से सभी विकास कार्य नई प्रसार प्रणाली द्वारा ही पूर्ण होने हैं।

**प्रसार सेवाओं से संबधित मुद्दे: 1.** ग्रामीण क्षेत्रों में प्रसार कार्य विषय के बारे में अनभिज्ञ लोगों को दिया जाना। जरूरी है कि ग्रामीण क्षेत्रीय स्तर पर काम करने वाले प्रसार कार्यकर्ताओं को निरंतर समय अंतराल पर प्रषिक्षण दिया जाए।

2. पश्चिमी शोध कार्यों की कार्यप्रणाली पर बहुत ज्यादा निर्भर होना। यह बहुत जरूरी है कि हम प्रसार कार्यों की विधियों को अपने वातावरण के अनुसार अपनाएं, जहां वह भलिभाँति उपयुक्त है वहां उनका उपयोग करें।

**3. प्रसार कार्यकर्ताओं की भूमिका में मतभेद:** जैसे की प्रोफेशनल स्तर में प्रसार का एक शिक्षण विषय के रूप में जाता है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में इसे प्रसार कार्य के रूप में। और इस प्रकार यह मतभेद तब और ज्यादा हो जाता है जब प्रसार कार्य की उम्मीद प्रसार विषय विशेषज्ञों से की जाने लगती हैं। यह मतभेद हम प्रोफेशनल व ग्रामीण स्तर के प्रसार कार्यकर्ताओं के मध्य निरंतर पारस्परिक मिलाव से कम कर सकते है।

# पशु चारे का संरक्षण, उपयोगिता, विधियां एंव सावधानियां

» डॉ. सोनू कुमार यादव
» डॉ. अंजनी कुमार मिश्रा
» डॉ. उपेंद्र सिंह नरवरिया
» डॉ. भावना अहरवाल
» डॉ. राहुल चौरसिया

पीएचडी शोध छात्र, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, सहायक प्राध्यापक, सहायक प्राध्यापक, पीएचडी शोध छात्र

पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय रीवा, मध्यप्रदेश

देश की लगभग 65-70 प्रतिशत जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए कृषि के साथ साथ पशु पालन पर निंभर है। हमारे देश में पशुओं को केवल गेहूं का सूखा भूसा या धान का पुआल खिलाकर जिन्दा रखा जाता है। इनमें सिलका एवं आक्जेलिक अम्ल प्रचुर मात्रा में पायी जाती है। जिसके लगातार सेवन से पशुओं में कई विकार या बीमारियां पैदा हो जाती है। जैसे-पशुओं का समय से गर्मी में न आना। पशुओं में गर्भ न ठहरना। पशुओं में शरीर का वजन न बढना। पशुओं की त्वचा खुरदरी हो जाना। अंतत: पशु कमजोर हो जाता है तथा दूध की मात्रा घट जाना। हड्डियों का कमजोर होना आदि।

हमारे देश में पशुओं के लिए 36 फीसदी हरे चारे की कमी है घटती जोत के कारण यहां पर मात्र 4 फीसदी कृषि भूमि पर हरे चारे का उत्पादन होता है। एक वैज्ञानिक सर्वे के अनुसार देश की कुल कृषि भूमि में से 8 प्रतिशत जमीन पर हरे चारे की पैदावार होनी चाहिए।

**चारा संरक्षण की उपयोगिता:** पशुओं से अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने के लिए उनके आहार में पर्याप्त मात्रा में पौष्टिक और हरा चारा आवश्यक है। फसल चक्र में चारे की फसलें उगाने के बावजूद साल में दो बार हरे चारे की कमी हो जाती है। मई जून तथा अक्टूबर में हरे चारे की कमी होती है। वहीं दूसरी ओर सिंचित क्षेत्रों में फरवरी-मार्च एवं अगस्त-सितंबर महीनों के दौरान हरा चारा जरुरत से ज्यादा ही हो जाता है। अत: अतिरिक्त हरे चारे को उन दिनों के लिए संरक्षित कर लिया जाता है। हरे चारे की गुणवत्ता बनी रहती है।

**चारा संरक्षण की विधियां:** दो प्रकार की विधियां अपनाकर हम चारे का संरक्षण कर सकते हैं। **1. साईलेज बनाकर, 2. हे बनाकर। साईलेज:** हरा चारा जिसमे नमी की पर्याप्त मात्रा होती है, हवा की अनुपस्थिति में जब किसी गड्ढे में दबाया जाता है तो किण्डवन की प्रक्रिया के कारण चारा कुछ समय बाद ही एक हरे अचार की तरह बन जाता है, जिसे साईलेज कहते हैं।

**साईलेज बनाने हेतु फसलों का चयन:** साईलेज बनाने के लिए हरे चारे की फसलें जैसे ज्वार, मक्का, बाजरा, मकचरी,जई तथा घासे जैसे नेपियर, सूडान, आदि उपयुक्त होती है। क्योंकि इनमें कार्बोहाईड्रेट की मात्रा अधिक होती है। इससे दबे चारे में किण्डवन क्रिया तेज होती है, साईलेज बनाने के चारो की फसलों को फूलने से लेकर दानों के दूधिया होने तक की अवस्था में काट लेना चाहिए। साईलेज बनाते समय चारे में नमी की मात्रा 65: होनी चाहिए, यदि हरे चारे में नमी (70-80:) हो तो इसे काटकर धूप में सुखावें, जिससे नमी 60 प्रतिशत तक हो जाये।

**साईलेज बनाने की विधि:** साईलेज गड्ढों में बनाया जाता है। उन्हे साइलो कहते हैं। जामीन के नीचे बनाये गये साइलो अच्छे रहते हैं। साईलेज बनाने के लिए एक अच्छा व सूखा स्थान उपयुक्त होता है। जो पशुशाला के पास हो। शुरु में जमीन के तल में कुछ घास फूस बिछा दें और कुछ आसपास लगा दे, जिससे चारे में मिट्टी नही लगेगी। एक गोल गड्ढा खोदें जो 8 फुट से ज्यादा गहरा न हो, घेरा इस पर निर्भर करता है कि हमें कितना साईलेज बनाना है। गड्ढे में रखने से पहले चारे की कुटी बना लें। कुटी को परतों में एक के ऊपर एक बिछाते जाएं, हर परत को कुटकर अच्छी तरह दबा दे ताकि बीच में हवा न रहे, उसे तब तक भरे जब तक गड्ढे के मुहं से दो - तीन फुट ऊंची परते न चली जाए। ढ़ेर को भूसे से ढक दे और बाद में मिट्टी पोत दें। हरा चारा जैसे-जैसे बैठता जाएगा परतों में दरार पड़ती जाएगी, इन दरारों को मिट्टी से भर देनी चाहिए। अगर हर चारा गड्ढा के मुंह के नीचे तक बैठ जाए तो गड्ढों से कुछ ऊचाई तक मिट्टी भर देनी चाहिए तथा इसे पलस्तर कर ढक दें। साईलेज 3 महीने मे मवेशियों को खिलानें लायक तैयार हो जाता है तो इसके बाद गड्ढे को कभी भी खोल सकते हैं। जानवरों को खिलाने के लिए जितने साईलेज की जरुरत पड़े उतना ही गड्ढे में से बाहर निकालें। अगर साईलेज अच्छा तैयार हुआ है तो उसका रंग चमकदार हरा होगा। साईलेज बिगड़ गया होगा तो उसका रंग भूरा और मटमैला हो जाएगा।

**हे:** सुखाए हुए चारे को हे कहते हैं। जो कि तैयार किये जाने के बाद, पोष्टिकता में बिना किसी विशेष हानि के गोदाम में रखा जा सकता है। हे बनाने के लिए चारा को इतना सुखाया जाता है कि चारे की नमी घटकर लगभग 15-20 प्रतिशत तक रह जाती है।

**हे बनाने हेतु फसलो का चयन:** हे बनाने के लिए बरसीम, लूसर्न, रिजका, लोबिया, सोयाबीन, जई, सुडान घास, लोबिया, नेपियर, गिन्नी, अंजन आदि घासों का प्रयोग किया जा सकता है। लेग्यूम्स घासों में प्रोटीन व विटामिन ए. डी. भी पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं।

**हे बनाने की विधि:** स्थानीय घास या दलहनी फसल का पहचान करें जिसका हे बनाया जा सके। घास की कटाई फूल आने से थोड़ा पहले करें। जई, मक्का की कटाई दुग्धावस्था में करें। ज्वार ,बाजारा की कटाई दुध जब गाढ़ा होने लगे तब करें। घास की काटाई 6 इंच ऊपर जमीन की सतह से करें ताकि उसे पुन: बढ़ने में आसानी हो सके। घास काटने का काम सुबह करें ताकि उसे दिन के धूप में सूखने का समय मिले। घास की कटाई कर उसे 2 दिनों तक धूप में सुखावें तथा 4-4 घण्टे के अंतराल से इसे पलटें, जिससे समान रुप से सूखे। दो दिन धूप में सूखाने के बाद इसे 2 दिन छाया में सुखावें। अब इसे शंकु आकार स्थिति में या खड़े स्थिति में इकट्ठे रखें। खिलाने से पहले इसे छोटी- छोटी टुकडो में काट कर कुटकी बना लें

**हे खिलाना:** पशुओं में प्रतिदिन 2-5 किलोग्राम प्रति 100 किग्रा.ँ शरीर भार की दर से हे बनाकर खिलाया जा सकता है।

# आम बजट 2023-24: घोषणाओं पर अमल की जरूरत

केंद्रीय मंत्री निर्मला सीतारमण ने 1 फरवरी, 2023 को आम बजट जारी करते हुए कई बड़ी घोषणाएं की हैं। इनमें कृषि क्षेत्र के लिए की गई घोषणाएं अहम हैं। भाषण के अलावा योजनाओं के खर्च-व्यय वाले मूल बजट में इनका कोई जिक्र तक नहीं है। ऐसा पहली बार नहीं है। बीते वर्ष भी कृषि क्षेत्र की बेहतरी वाली बड़ी घोषणाएं भाषण में शामिल रहीं लेकिन उनपर वित्त वर्ष बीत जाने को है और सिर्फ विचार जारी रहा। कोई रूप-रेखा या निष्कर्ष नहीं निकल पाया। वित्त वर्ष 2023-24 के लिए बजट में एग्रीकल्चर एक्सीलेटर फंड की घोषणा की गई। कहा गया है कि यह फंड ग्रामीण क्षेत्रों में युवा उद्यमियों के जरिए चलाए जा रहे एग्री स्टार्टअप्स को सहयोग देगा। यह स्टार्टअप्स मार्डन तकनीकी, उन्नत कृषि अभ्यास जैसे समाधान पेश करेंगे जो किसानों की चुनौतियों को कम करेगा। उन्हें उत्पादन और मुनाफे में सहयोग प्रदान करेगा। हालांकि, सरकार का यह फंड कब और कैसे होगा इसकी कोई रूप-रेखा नहीं है। बल्कि बीते वर्ष ऐसी ही मिलती-जुलती घोषणा हुई थी जो पूरी नहीं की जा सकी। वित्त वर्ष 2022-23 के बजट में निर्मला सीतारमण ने ऐलान किया था कि किसानों को डिजिटल और हाईटेक सेवाएं देने के लिए पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप वाली स्कीम लांच की जाएगी। हालांकि, यह स्कीम नहीं लांच की गई। ऐलान में कहा गया था कि इस स्कीम को प्राइवेट एग्री-टेक प्लेयर और हितधारकों के साथ सार्वजनिक क्षेत्र के शोध संस्थानों के साथ मिलकर लांच किया जाएगा। वित्त वर्ष 2023-24 के बजट में इस बारे में कहा गया है कि अभी इस पर विचार जारी है। इसके अलावा वित्त वर्ष 2022-23 के बजट में यह भी ऐलान किया था कि को-इन्वेस्टमेंट मॉडल के तहत जुटाए गए पैसों के जरिए नाबार्ड उन एग्रीकल्चर और रूरल इंटरप्राइज स्टार्टअप्स को वित्त देगा जो फार्म प्रोड्यूस वैल्यू चैन के लिए काम करेंगे। इसके अलावा स्टार्टअप्स एफपीओ को मदद पहुंचाएंगे। किसानों को किराए पर मशीनरी देंगे। साथ ही आईटी संबंधी सपोर्ट भी किसानों को देंगे। इस ब्लेंडेड कैपिटल फंड के बारे में वित्त वर्ष 2023-24 में कृषि मंत्रालय की ओर से कहा गया है कि नाबार्ड ने एक कॉन्सेप्ट पेपर तैयार किया है जो विचाराधीन है। इसी तरह से बजट 2023-24 में कपास की फसल उत्पादन को बढ़ाने के लिए भी घोषणा की है। निर्मला सीतारमण ने कहा कि एक कल्सटर आधारित वैल्यू चैन पीपीपी मोड से तैयार किया जाएगा। इसमें किसान, राज्य और उद्योग का गठन होगा। हालांकि यह स्कीम कैसे आकार लेगी और कितना फंड इसके लिए होगा यह स्पष्ट नहीं है। इसी तरह से बजट 2023-24 में उच्च मानक वाले हॉर्टिकल्चर क्रॉप के लिए 2200 करोड़ रुपए आत्मनिर्भर स्वच्छ पौध प्रोग्राम (आत्मनिर्भर हॉर्टिकल्चर क्लीन प्लांट प्रोग्राम) की घोषणा हुई है। इसके तहत रोगमुक्त पौध, गुणवत्तापूर्ण पौध सामाग्री पर काम होगा। हालांकि कैसे होगा यह स्पष्ट नहीं है।

-खेती के रकबे की सिंचाई का भी होगा पूरा लेखा-जोखा, लघु, मध्यम, छोटे किसानों की स्थिति का होगा आंकलन

# किसानों की गिनती कराएगी मध्यप्रदेश सरकार

जागत गांव हमार, भोपाल।

प्रदेश में किसानों की गिनती शुरू हो गई है। इससे लघु, मध्यम, छोटे व बड़े किसानों की स्थिति का पता चलेगा। पटवारियों की ओर से तैयार गणना रिपोर्ट से किसानों का डाटा बैंक बनेगा। इनका इस्तेमाल सरकारी योजनाएं बनाने और उसका लाभ दिलाने में होगा। इस बार किसानों की संख्या के साथ ही फसल के पैटर्न, सिंचाई और भूमि के उपयोग का ब्योरा भी जुटाया जाएगा। किसानों की गिनती पांच साल में एक बार की जाती है। इससे पहले 2015-16 में गिनती कराई गई थी। बाद में कोविड की वजह से स्थगित रखा गया था। अब आठ साल बाद इसकी प्रक्रिया शुरू की गई है। कृषि संगणना एक प्रकार से खेती के रकबे के साथ किसानों की संख्या का लेखा-जोखा होता है। यह कृषि सांख्यिकी के संग्रह की व्यापक प्रणाली का हिस्सा है। इसमें कृषि क्षेत्र की संरचना के बारे में जानकारी जुटाई जाती है। वर्ष 2015-16 में किसानों की गणना और खेती के रकबे की जानकारी जुटाई गई थी। खेती का रकबा छोटा हुआ है। इसलिए किसानों की संख्या में वृद्धि संभव है, लेकिन जोत के रकबे छोटे हुए हैं। पिछली गणना में सबसे ज्यादा छोटे किसान थे। किसानों के आंकड़े जुटाने वाला राजस्व अमला स्मार्ट फोन, टेबलेट, लैपटॉप, पर्सनल कम्प्यूटर जैसे हैंड हेल्ड डिवाइस का उपयोग कर सॉफ्टवेयर के माध्यम से डाटा का संग्रह कर रहा है। कृषि संगणना परिचालकों की प्रगति की निगरानी वेब पोर्टल के माध्यम से की जा रही है।

## नहीं हो रहा समाधान

उधर, फसल गिरदावरी के लिए बनाए गए सारा एप पर लगातार विसंगतियां सामने आ रही हैं। सैटेलाइट इमेज के आधार पर काम करने वाले इस एप पर किसान की जमीन में दर्ज अलग-अलग फसलों की बजाय अगर सरसों दर्ज है तो पूरी जमीन पर सिर्फ सरसों की फसल की इमेज ही दिख रही है। भूअभिलेख द्वारा फसल गिरदावरी के लिए तैयार कराए गए सारा एप पर यह विसंगति लगातार दिख रही है। विसंगति की स्थिति यह है कि गिरदावरी के दौरान किसी गांव में 70 प्रतिशत सर्वे नंबर दोबारा सत्यापन के लिए आ रहे हैं तो किसी गांव में 10 प्रतिशत नंबर सामने आ रहे हैं।

## इस तरह की आ रही समस्या

रिक्त भूमि या भूखंड में भी सैटेलाइट इमेज पर फसल दिख रही है। गिरदावरी में अन्य फसलों की बजाय अधिकतर जगह गेहूं, चना, राई-सरसों की फसल ही दिख रही है। इमेज गिरदावरी का मौके पर सत्यापन करने के लिए मिले नंबर बिना किसी निर्धारित अनुपात के मिले हैं। सत्यापन के लिए समय सीमा बेहद कम दी गई है। सत्यापन के बाद पटवारी के मोबाइल से फसल अपलोड नहीं हो रही है। गिरदावरी इमेज पर डूब क्षेत्र में भी फसल दिख रही है। अपडेट के बाद भी गिरदावरी मॉड्यूल में फसल विसंगति सही करने का काम नहीं हो रहा है।

-मप्र में सरकारी के दावों की निकल रही हवा, पंजीयन शुरू

# किसानों का गेहूं खरीदी से हो रहा है मोहभंग

जागत गांव हमार, भोपाल।

समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदी के लिए 6 फरवरी से पंजीयन का दौर शुरू हो गया है। इस वर्ष की गेहूं खरीदी मार्च में होना प्रस्तावित है। हालांकि गिरदावरी में देरी के चलते पंजीयन ओर प्रक्रिया में देरी हुई है। इस बार नीति में परिवर्तन नहीं हुआ है। पिछले साल वाली नीति में 110 रुपए की बढ़ोतरी के साथ 2125 रुपए प्रति क्विंटल के दाम से किसानों से सरकार गेहूं खरीदेगी। लेकिन जिले में लगातार सरकारी गेहूं खरीदी से किसानों का मोहभंग होता जा रहा है। मंडियों में अच्छे दाम मिल रहे है।

वर्तमान में भी मंडी में 2600 से 3 हजार तक दाम मिल रहा है तो कम दाम समर्थन के होने के कारण इसमें रुचि नहीं ले रहे है। वर्ष 2020 में कोविड के लॉकडाउन के समय बाढ़ के बाद जिले में गेहूं का उत्पादन भी बंपर हुआ था ओर मंडियों भी बंद थी। ऐसे में रेकॉर्डतोड़ खरीदी हुई थी। इसके अलावा बाकी वर्ष को छोड़ दे तो किसानों ने इसमें रुचि नहीं दिखाई है। सरकार के तमाम प्रचार ओर दावों के बाद भी किसान समर्थन के बजाए मंडी व खुले बाजार में गेहूं बेचने में रुचि दिखा रहा है।

## 2125 प्रति क्विंटल में होगी खरीदी

पिछले साल गेहूं खरीदी में सरकार ने किसानों का गेहूं 2015 रुपए प्रति क्विंटल के मान से खरीदा है। इस बार मात्र 110 रुपए की बढ़ोतरी के सरकार 2125 रुपए प्रति क्विंटल के दाम से गेहूं खरीदेगी। इसके लिए पंजीयन 6 फरवरी से शुरु होगा ओर मार्च में खरीदी प्रस्तावित है। इधर मंडी में गेहूं के वर्तमान में 2600 से 3100 तक का दाम चल रहा है। जब मंडी ओर खुले बाजार में गेहूं का अच्छा दाम मिल रहा है तो किसान मात्र 2125 रुपए में सरकारी खरीदी पर अपना गेहूं बेचने मे रुचि नहीं दिखा रहे है। इसी कारण साल दर सल सरकारी खरीदी में किसानों की संख्या कम हो रही है तो खरीदी का आंकड़ा कम होता जा रहा है।

## 28 फरवरी तक चलेगा पंजीयन

**वर्ष 2023-24 के लिए समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदी के लिए 6 फरवरी से पंजीयन का दौर शुरु होगा जो 28 फरवरी तक चलेगा और मार्च में खरीदी होना प्रस्तावित है। 2125 रुपए प्रति क्विंटल के मान से किसानों का गेहूं सरकार खरीदेगी। 1 हेक्टेयर में 45 क्विंटल का उत्पादन औसत माना गया है। जितने हेक्टेयर का किसान पंजीयन कराएगा उसके बाद उसका सत्यापन किया जाएगा। उसके अनुसार गेहूं खरीदी में ध्यान रखा जाएगा। आधार से बैंक खाता लिंक होने पर भुगतान होगा। ऐसे में पंजीयन के समय ही आधार लिंक किसानों का मांगा जा रहा है जिससे भुगतान में दिक्कत ना हो। इस बार समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदी की नीति में पिछले साल वाली ही व्यवस्थाएं है इस बार परिवर्तन नहीं किया गया है। किसान सशुल्क व निशुल्क दोनों तरह से पंजीयन करा सकता है। ग्राम पंचायत से लेकर तहसील व सोसायटियों व खुद के मोबाइल से निशुल्क पंजीयन हो सकेगा। खरीदी को लेकर किसान को मोबाइल पर मैसेज आएगा तो भुगतान सीधे खाते में होगा।**

-स्व सहायता समूहों को कर रहे तैयार

# अब महिलाएं भी चलाएंगी गौशाला
## गांवों में 21 गोशालाएं बनकर तैयार

जागत गांव हमार, भोपाल।

शासन की 100 गायों की क्षमता वाली गौशालाओं का संचालन अब महिलाओं के हाथों में भी होगा। दूध से बने प्रोडक्ट हो या गाय के गोबर से कंडे, गैस प्लांट इन सभी क्षेत्रो में भी महिलाओं के समूह अपनी भागीदारी कर सकेंगे, जिसके लिए 21 गौशालाएं ग्रामीण क्षेत्रों में खुल चुकी हैं। मनरेगा के तहत 100 गायों की क्षमता वाली गौशालाएं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित की जाना है। 21 गौशालाओं का निर्माण अब तक किया जा चुका है। स्व सहायता समूह और ग्रामीण समितियों को इनकी कमान सौंपी गई है। जिला पंचायत विभाग द्वारा विभिन्न गांवों में 100 से अधिक गायों की क्षमता वाली इन गौशाला में विभिन्न तरीके के रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं, जिसके लिए गाय के दूध का व्यापार हो या दूध से बने प्रोडक्ट का निर्माण कार्य करने के लिए व्यवसाय करना हो। गोबर से बने कंडे हो या गोबर गैस प्लांट लगाना हो, के लिए शासन बढ़ चढ़कर मदद कर रहा है।

## महिलाएं भी आईं आगे

सनावदिया, गिरोता, सेजवानी, संगड़ोद, मेढ़, सीहोर, सिमरोल, राजोदा, चितोड़ा, हरियाखेड़ी सहित कई गांवों में गौशालाओं का निर्माण जिला पंचायत द्वारा पंचायत स्तर पर किया गया है, जिसमें स्व सहायता समूह और गांव की गौसेवा समितियां कार्य कर रही हैं। गौसंवर्धन बोर्ड के माध्यम से 20 रुपए प्रति गाय के मान से रखरखाव और गायों के पालन-पोषण के लिए प्रतिमाह भुगतान किया जा रहा है, जो भुगतान मंडी प्रबंधन के माध्यम से गौसंवर्धन बोर्ड और जिला पंचायत से पंचायतों के खातों में पहुंचाया जा रहा है।

## जमीन की तलाश

मप्र में वर्ष 2019-20 में 12 गौशालाएं तैयार की गई। वहीं 20-21 में 9 गौशालाओं का निर्माण किया गया है। आने वाले समय में और भी गौशालाओं के लिए जमीनों की तलाश की जा रही है। मनरेगा से बन रहीं इन गौशालाओं में रहने वाली गायों के चारे-भूसे के लिए 125 करोड़ की अतिरिक्त सहायता मिलने की घोषणा भी की गई।

-पशुपालन मंत्री ने की योजनाओं के प्रगति की समीक्षा

# मप्र के बुरहानपुर जिले के घर बनेंगे जल-मंदिर

**भोपाल।** पशुपालन एवं डेयरी, सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण मंत्री प्रेमसिंह पटेल ने प्रभार जिले बुरहानपुर में शासकीय योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की। पटेल ने बुरहानपुर जिले में आज से शुरू जल-मंदिर योजना की प्रशंसा करते हुए कहा कि इससे भू-जल स्तर में सुधार आएगा। जिले का जो घर रूफटॉप हॉर्वेस्टिंग करवाते हुए वर्षाकाल के जल का भूमि में संग्रहण करेगा, जल-मंदिर कहलाएगा।

**पट्टा वितरण नियमानुसार करें-** मंत्री ने कहा कि सभी विभाग आपसी समन्वयता के साथ पात्र हितग्राहियों को शासकीय योजनाओं का लाभ दिलाना सुनिश्चित करें। उन्होंने शाहपुर में स्टेडियम

निर्माण, जनपद पंचायत खकनार में पेसा एक्ट क्रियान्वयन, जल जीवन मिशन, आवास योजना, स्वास्थ्य व्यवस्थाओं, आजीविका मिशन, सड़क निर्माण आदि की समीक्षा की। पटेल ने कहा कि नागरिकों को पट्टा वितरण नियमानुसार करते हुए व्यवस्थित स्थान पर दें।

– छोटे किसानों को लाभ, प्रौद्योगिकी के जरिये कृषि को मिलेगा बढ़ावा

## बजट को किसान हितेषी बताकर कृषि मंत्री ने पीएम का जताया आभार

# बजट में कृषि एवं किसान कल्याण के लिए अनेक महत्वपूर्ण प्रावधानः तोमर

जागत गांव हमार, भोपाल।

वित्तीय वर्ष 2023-24 के बजट में कृषि एवं किसान कल्याण के लिए अनेक महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने बजट में किसानों के साथ ही गरीब और मध्यम वर्ग, महिलाओं से लेकर युवाओं सहित समाज के सभी वर्गों के समग्र विकास का समावेश करने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के प्रति आभार व्यक्त किया है। तोमर ने कहा कि बजट से छोटे किसानों को लाभ होगा, वहीं प्रधानमंत्री मोदी की दूरदृष्टि के अनुरूप बजट में कृषि को आधुनिकता से जोड़ते हुए प्रौद्योगिकी के जरिये कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने पर जोर दिया है ताकि किसानों को दीर्घकाल तक व्यापक लाभ मिलें।

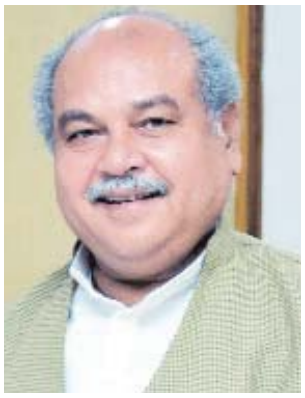

केंद्रीय कृषि मंत्री तोमर ने बताया कि कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान सहित कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय का कुल बजट इस बार लगभग 1.25 लाख करोड़ रुपये का है। इसमें मोदी सरकार की महत्वाकांक्षी- प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान) योजना के लिए 60 हजार करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। देश में लगभग 86 प्रतिशत छोटे किसान हैं, जिन्हें किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) के माध्यम से काफी लाभ पहुंचा है। इन किसान भाइयों-बहनों को इसी तरह सतत लाभ मिलता रहें, इसके लिए इस बार 23 हजार करोड़ रु. का प्रावधान किया गया है, वहीं पशुपालन, डेयरी, मत्स्यपालन पर भी ध्यान देते कृषि ऋण लक्ष्य बढ़ाकर 20 लाख करोड़ रु. किया गया है। मोदी सरकार द्वारा डिजिटल एग्रीकल्चर मिशन प्रारंभ किया गया है, जिसे बढ़ावा देने के उद्देश्य से 450 करोड़ रु. तथा टेक्नालाजी द्वारा कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने के संबंध में लगभग 600 करोड़ रु. का प्रावधान किया गया है

केंद्रीय मंत्री तोमर ने बताया कि, प्राकृतिक खेती को जन-आंदोलन का स्वरूप देने के लिए प्रधानमंत्री ने पहल की, जिसे बढ़ावा देने के लिए 459 करोड़ रु. का प्रावधान किया है। 3 साल में प्राकृतिक खेती के लिए 1 करोड़ किसानों को सहायता दी जाएगी, जिसके लिए 10 हजार बायो इनपुट रिसर्च सेंटर्स खोले जाएंगे। छोटे-मझौले किसानों को एफपीओ के जरिये संगठित करते हुए उन्हें खेती-किसानी से संबंधित सभी सुविधाएं मुहैया कराने का लक्ष्य रखा गया है, जिसके लिए 10 हजार नए एफपीओ बनाए जा रहे हैं। ये एफपीओ छोटे-मझौले किसानों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने की दिशा में क्रांतिकारी कदम है, जिसका लाभ इन किसानों को मिलने लगा है। आगे भी यही गतिशीलता बनी रहें, इसके लिए नए एफपीओ के गठन के संबंध में 955 करोड़ रुपए का बजट प्रावधान इस साल किया गया है, वहीं किसानों के लिए हितकारी कृषि इंफ्रा फंड व प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। खाद्य एवं पोषण सुरक्षा केंद्र सरकार की प्राथमिकताओं में है, जिसके लिए बजट बढ़ाकर 1623 करोड़ रुपए प्रावधान किया गया है। केंद्रीय मंत्री तोमर ने बताया कि कृषि से जुड़े स्टार्टअप को प्राथमिकता दी जाएगी। युवा उद्यमियों द्वारा कृषि-स्टार्टअप को प्रोत्साहित करने के लिए कृषि त्वरक कोष स्थापना किया जाएगा, जिसके लिए 5 साल हेतु 500 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है।

### प्रधानमंत्री आवास योजना का बजट बढ़ा

केंद्रीय मंत्री का मरने इस बजट को जनकल्याणकारी और आमजन का बजट बताते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हर बेघरो के सिर पर छत देने की गारंटी देने वाला पीएम आवास योजना का बजट में भी बढ़ोतरी की है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना को और तेज गति देते हुए बजट करीब 66 प्रतिशत बढ़ाकर 79 हजार करोड़ रुपए किया गया है। बजट से रोजगार भी बढ़ेंगे। बच्चों व किशोरों के लिए राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय स्थापित किया जाएगा। अगले 3 साल में 740 एकलव्य स्कूलों के लिए 38 हजार 800 टीचर्स और सपोर्ट स्टाफ नियुक्त किए जाएंगे, वहीं 2014 से स्थापित मौजूदा 157 मेडिकल कॉलेजों के साथ सहस्थान में 157 नए नर्सिंग कॉलेज खोलने का प्रावधान भी स्वागतयोग्य है। कोरोना से प्रभावित हुए छोटे-मझोले उद्योगों को बजट में राहत दी गई है।

### मिलिट्स को अब श्रीअन्न के नाम से जाना जाएगा

**केंद्रीय मंत्री ने बताया कि मिलेट्स को अब श्रीअन्न के नाम से जाना जाएगा। श्रीअन्न को लोकप्रिय बनाने के कार्यक्रमों में भारत सबसे आगे है। भारतीय मिलेट्स अनुसंधान केंद्र, हैदराबाद को उत्कृष्ता केंद्र के रूप में बढ़ावा दिया जाएगा, जिससे वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी श्रेष्ठ कार्य कर सकें। उद्यानिकी क्षेत्र के विकास के लिए बजट बढ़ाकर 2200 करोड़ रुपए किया है।**

### अमृतकाल का पहला बजट

केंद्रीय मंत्री तोमर ने इस बजट को अमृतकाल का यह पहला बजट बताते हुए कहा कि जनकल्याणकारी बजट आजादी के 100 साल बाद भारत की परिकल्पना का बजट है। मोदी सरकार महत्वाकांक्षी लोक हित एजेंडा पर निरंतर काम कर रही है। इसी कड़ी में कोविड महामारी के समय से गरीबों के लिए चलाई जा रही प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना में 80 करोड़ लोगों को मुफ्त राशन दिया जा रहा है और अब बजट में यह योजना सालभर के लिए बढ़ा दी गई है। मोदीजी द्वारा 2014 में काम संभालने के बाद से सरकार की कोशिश आम लोगों का जीवन बेहतर बनाने की रही है, इसका सद्परिणाम प्रति व्यक्ति आय 1.97 लाख रुपए यानी दोगुना से ज्यादा हो गई है, वहीं आयकरदाताओं के लिए भी बजट में काफी राहत प्रदान की गई है।

-उद्यानिकी के वैज्ञानिक ने तैयार किया टिशू कल्चर

# स्ट्रॉबेरी की खेती में मुनाफा कमा रहे किसान

जागत गांव हमार, बनखेड़ी।

भाऊसाहब भुस्कुटे स्मृति लोक न्यास द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर नर्मदापुरम के उद्यानिकी वैज्ञानिक लवेश कुमार चौरसिया द्वारा जिले में पहली बार टिशू कल्चर द्वारा निर्मित स्ट्रॉबेरी की विंटर डाउन किस्म के दो-दो सौ पौधों को बनखेड़ी, पिपरिया, सोहागपुर और केसला विकास खंड के 9 किसानों के प्रक्षेत्र पर लगवाया गया। जिसमें से ग्राम तिंदवाड़ा के किसान गोपाल कुशवाहा द्वारा अपने प्रक्षेत्र पर बेहतर उत्पादन कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त अन्य ग्रामों में तिंदवाड़ा, महुआखेड़ा, सिमारा, बनखेड़ी, सोमलवाड़ा खुर्द, सोहागपुर के किसान भी स्ट्रॉबेरी का उत्पादन ले रहे हैं।

**लागत भी अधिक नहीं आई-** किसान गोपाल ने जैविक रूप से स्ट्रॉबेरी का उत्पादन किया जिससे उनकी लागत भी अधिक नहीं आई है। उन्होंने केव्हीके में स्टॉल लगाकर अपनी स्ट्राबेरी को बनखेड़ी के नागरिकों से परिचय करा कर अच्छे से विपणन की योजना बनाई है। जिसे वे 100 रुपए में 250 ग्राम की पैकिंग में स्ट्रॉबेरी का विक्रय भी कर रहे हैं। तिंदवाड़ा में उन्होंने अक्टूबर के प्रथम सप्ताह में कृषि विज्ञान केंद्र से 200 पौधों को लेकर लगाया।

### 25 पौधे सूख गए

इस बार 17 अक्टूबर तक अधिक वर्षा होने के कारण उनके 25 पौधे सूख गए हैं। अब वे 1.5 कतारों में लगे 175 पौधों से प्रति 2 दिन में लगभग 1.5 से 2.0 किलो उत्पादन ले रहे हैं। इससे लगभग प्रति 2 दिन मे 600 रुपए की शुद्ध आय प्राप्त कर रहे हैं। अभी तक उन्होंने 15 तुड़ाई से लगभग 9000 की आय प्राप्त कर चुके है। अभी अगले 25 से 30 दिन तक उत्पादन आता रहेगा।

### बढ़ गई आय

कृषि विज्ञान केंद्र के उद्यानिकी वैज्ञानिक लवेश कुमार चौरसिया द्वारा लगाए प्रदर्शन ब्रोकली, शिमला मिर्च, स्वीट कार्न में भी उन्हें अच्छी सफलता-पहचान मिली है। उन्होंने परवल को लगाकर भी अच्छी आय व समाज में अपनी पहचान कायम की है।

- जिले मे स्ट्रॉबेरी का हाई वैल्यू फसल एवं फसल विविधीकरण के रूप मे प्रक्षेत्र परीक्षण किया जा रहा है। स्ट्रॉबेरी की खेती भविष्य में किसानों के लिए वरदान साबित होगी। इससे किसान अन्य फसलों पर निर्भर न रहकर स्ट्रॉबेरी की फसल से अधिक आय प्राप्त कर सकते हैं।

**डॉ. संजीव कुमार गर्ग, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं केंद्र प्रमुख, नर्मदापुरम**

# फसलों को बीमारी से बचाने खेत में पहुंच किसानों को दिए टिप्स

**टीकमगढ़ के वैज्ञानिकों ने खेतों का किया भ्रमण**

जागत गांव हमार, टीकमगढ़।

कृषि विज्ञान केन्द्र टीकमगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बीएस किरार, वैज्ञानिक डॉ. आरके प्रजापति, डॉ. यूएस धाकड़ द्वारा ग्राम सिमरिया, पराखास, सुंदरपुर, बड़ागांव आदि ग्रामों में कृषकों के खेतों में लगी रबी फसलों का भ्रमण कर निरिक्षण किया गया जिसमें गेहूं में राइजोकटोनिया जड़ सड़न की बीमार से खेत में धब्बो के रूप में गेहूं के पौधे की पत्तियां पीली हो रही हैं, जिसके लिए खेत में जहां इस तरह की समस्या दिख रही है, वहां पर किसानों को सलाह दी गई की वो इन जगहों पर गुड़ाई करके (टैबुकोनाजोल प्ररोपोकोनाजोल) दवा की एक मिली मात्रा को एक लीटर पानी के साथ घोलकर ट्रेंचिंग अथवा जड़ के क्षेत्र में गुड़ाई करके छिड़काव करें। गेहूं की फसल में कहीं-कहीं तापमान के अचानक बदलाव से पत्ती भी झुलस जा रही है। जिसके लिए (टैबुकोनाजोल 10: सल्फर 65: डब्ल्यूजी ) की 1 ग्राम मात्रा को एक लीटर पानी के साथ घोल बनाकर छिड़काव करें या दवा की 1.25 किग्रा मात्रा को एक हेक्टेयर में उपयोग करें। कुछ खेतों में सरसों में माहू का प्रकोप हो रहा है, जो सरसों की बोवनी देरी से हुई है उनमें किसानों को (इमिडाक्लारोप्रिड 17.8: एसएल) की 1 मिली मात्रा या पाईरीप्ररोअक्सीफेन 10: ईसी की 1 मिली प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें। वहीं चने की फसलों में इल्ली के प्रकोप को रोकने के लिए क्विनालफॉस दवा की 2 मिली/लीटर मात्रा पानी के साथ

मिलाकर छिड़काव करें। टमाटर में झुलसा रोग का प्रकोप बढ़ा देखा गया जिसके लिए आईप्ररोवैलीकर्ब 5.5 प्रोपीनेब 61.2 की 600 ग्राम मात्रा प्रति एकड़ के हिसाब से 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। वैज्ञानिकों ने प्राकृतिक खेती के बारे में भी किसानों को जागरूक किया और रासायनिक दवाओं का उपयोग अंतिम विकल्प के रूप में उपयोग करने की सलाह दी।

### वन विभाग दो वन समितियों की पांच फड़ों का संचालन ग्रामसभाओं को सौंपेगा, चल रही तैयारी

# नई कवायद: पहली बार कराहल की पांच ग्राम पंचायतों की ग्राम सभाएं करेगी तेंदूपत्ता संग्रहण

जागत गांव हमार, श्योपुर।

भलेही अभी तेंदूपत्ता संग्रहण का लक्ष्य श्योपुर जिले को नहीं मिला है,लेकिन वन विभाग के द्वारा तेंदूपत्ता संग्रहण किए जाने संबंधी तैयारियां अभी से शुरू कर दी है। ताकि तेंदूपत्ता संग्रहण के लिए जो लक्ष्य मिलेगा,उसकी पूर्ति आसानी के साथ हो सके। खास बात यह है कि इस बार 16 वन समितियों के साथही 5 ग्राम पंचायतों की ग्राम सभाएं भी तेंदूपत्ते का संग्रहण करेगी। वन विभाग पेसा एक्ट के तहत दो वन समितियों की पांच तेंदूपत्ता फड़ों का संचालन पहली बार ग्राम सभाओं को सौंपने की तैयारी कर रहा है। यहां बता दें कि शासन के द्वारा लागू किया गया पेसा एक्ट श्योपुर जिले में आदिवासी विकासखंड कराहल के अन्तर्गत आने वाली ग्राम पंचायतों में लागू होगा। जिसकारण कराहल क्षेत्र की ग्राम पंचायतों की ग्राम सभाओं को सशक्त बनाने के लिए शासन के द्वारा विशेष अधिकार सौपे जा रहे है। ताकि ग्राम सभाओं को आर्थिक रूप से भी सशक्त बनाया जा सके। यही वजह है कि वन विभाग तेंदूपत्ता संग्रहण का काम कराहल क्षेत्र की 5 ग्राम पंचायतों की ग्राम सभाओं को सौंपने जा रहा है। इस संबंध में वन विभाग के द्वारा प्रशिक्षण देने के साथही अन्य तैयारियां की जा रही है।

### ये ग्राम सभाएं करेगी संग्रहण

वन विभाग के द्वारा जिन 5 ग्राम पंचायतों की ग्राम सभाओं को तेंदूपत्ता संग्रहण का काम सौपेगा,उनमें ग्राम पंचायत कालीतलाई, मेहरबानी, कराहल, बांकुरी और खोरी शामिल है। वन विभाग के सूत्रों की माने तो श्योपुर की समिति में संचालित सात तेंदूपत्ता फड़ में से एक फड की जिम्मेदारी ग्राम पंचायत कालीतलाई की ग्राम सभा को सौपी जाएगी। जबकि कराहल वन समिति के अंतर्गत संचालित एक दर्जन से ज्यादा तेंदूपत्ता फडों में से चार फड़ों की जिम्मेदारी ग्राम पंचायत कराहल, मेहरबानी, खोरी और बांकुरी ग्राम पंचायत की ग्राम सभा को दी जाएगी।

### ये वन समितिया करती है तेंदूपत्ता संग्रहण

दरअसल, वनक्षेत्र में निवासरत लोगों की आजीविका का मुख्य साधन वनोपज ही हैं। इसमें तेंदूपत्ता भी एक मुख्य वनोपज है, जो प्रति वर्ष मई-जून माह में संग्रहित किया जाता है। इसके जरिए जिले के लोगों को रोजगार मिलता है। तेंदूपत्ता संग्रहण का कार्य जिला वनोपज यूनियन 16 वन समितियों के माध्यम से कराया जाएगा। जिनमें श्योपुर, पिपरानी, नयागांव, कराहल, गोरस, पहेला, खिरखिरी, पर्तवाड़ा, सेसईपुरा, रतोदन, ओछापुरा, डोब, हीरापुर, वीरपुर, विजयपुर तथा गसवानी शामिल हैं।

### गत वर्ष लक्ष्य से ज्यादा संग्रहण

यहां बता दें कि गत वर्ष वन विभाग ने लक्ष्य से अधिक तेंदूपते का संग्रहण किया है। बता दें कि वर्ष 2022 में श्योपुर के सामान्य वन मंडल को 23400 मानक बोर तेंदूपत्ता संग्रहण किए जाने का लक्ष्य मिला था। इस लक्ष्य के मुकाबले वन विभाग के द्वारा 25040 मानक बोर तेंदूपत्ता संग्रहण कर लिया गया। जो कि लक्ष्य से अधिक है।

### 13 साल में 6 बार हुई लक्ष्य की पूर्ति

गुजरे 13 साल में श्योपुर का वन विभाग छह बार ही लक्ष्य की पूर्ति कर सका है। जबकि सात बार लक्ष्य की पूर्ति करने में असफल रहा है। वन विभाग के सूत्रों की माने तो वर्ष 2012, 2013, 2017, 2019 और वर्ष 2020 व 2022 में वन विभाग ने तेंदूपत्ता संग्रहण के लक्ष्य की पूर्ति कर ली थी, लेकिन वर्ष 2010, 2011, 2014, 2015, 2016, 2018 और वर्ष 2021 में लक्ष्य की पूर्ति वन विभाग से नहीं हो सकी है।

हां, अभी तेंदूपत्ता संग्रहण का लक्ष्य नहीं मिला है। लेकिन इस बार तेंदूपत्ता संग्रहण का काम 5 ग्राम पंचायतों की ग्राम सभाएं करेगी। इसकी तैयारियां चल रही है।

**सीएस चौहान, डीएफओ, सामान्य वन मंडल श्योपुर**

### वन मंत्री ने जनजातीय उद्यमिता शिविर का किया शुभारंभ,बोले

# तेन्दूपत्ता संग्राहकों के बच्चों को सरकार देगी शहद-च्यवनप्राश

जागत गांव हमार, भोपाल।

वन मंत्री डॉ. विजय शाह ने कहा है कि तेन्दूपत्ता तोड़ने वाले संग्राहकों के कुपोषित बच्चे, जो आंगनवाड़ी में अध्ययनरत हैं, उन्हें 6-6 महीने की राशि और खाद्यान्न उपलब्ध कराया जाकर उनके जीवन को खुशहाल बनाने के लिए राज्य सरकार गंभीरता से प्रयास कर रही है। शाह खंडवा जिले के वन ग्राम आंवलिया में जनजातीय उद्यमिता प्रशिक्षण विकास केन्द्र के एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का शुभारंभ कर रहे थे। वन मंत्री ने प्राथमिक लघु वनोपज समितियों के प्रबंधकों के प्रशिक्षण सह जागरूकता कार्यशाला में कहा कि तेन्दुपत्ता संग्राहकों के बच्चों का कुपोषण दूर करने के लिए वन विभाग द्वारा महुआ का च्यवनप्राश बनाया जाएगा। कुपोषित बच्चों को प्रतिदिन 10 ग्राम शहद और 15 ग्राम च्यवनप्रास उपलब्ध कराया जाएगा। तेन्दूपत्ता प्रबंधकों की मृत्यु होने की दशा में विभाग द्वारा उनके परिजन को 6 लाख की सहायता दी जाएगी।

### मासिक मानदेय में वृद्धि

वन मंत्री ने कहा कि प्राथमिक वनोपज समिति प्रबंधकों को आगामी अप्रैल माह से मौजूदा मासिक मानदेय 10 हजार से बढ़ कर 13 हजार रुपए मिलने लगेगा। वन मंत्री ने प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान में खालवा ब्लाक के चिन्हित 10 टीबी मरीज को पोषण आहार वितरित किया। उन्होंने वनग्राम आंवलिया परिसर में पौध-रोपण भी किया।

### -तीन की जगह अब मिलेगा 5 लाख का लोन

# मध्यप्रदेश के किसानों की बढ़ी बैंक लिमिट

जागत गांव हमार, भोपाल।

विधानसभा चुनाव के पहले ही सरकार किसानों को रिझाने के लिए खुशियों का पिटारा ले कर आई है। मप्र के किसानों के लिए यह खुश खबर है। को-आपरेटिव बैंक में किसानों की लोन की लिमिट बढ़ाई गई है। पहले किसानों को 3 लाख का लोन दिया जाता था। इसे बढ़ाकर 5 लाख कर दिया गया है। लोकसभा सांसद गजेंद्र पटेल ने बताया किसानों की आए दिन कृषि लोन को लेकर लिमिट की समस्या आ रही थी, जिसकी मांग भी की जा रही थी। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान व विभाग के मंत्री अरविंद भदौरिया को पत्र लिखकर लिमिट बढ़ाने की मांग की थी। पत्र पर विचार कर किसानों की लिमिट बढ़ाई गई है। 3 लाख तक 0 प्रतिशत ब्याज पर व अगले 2 लाख पर बैंक द्वारा निर्धारित ब्याज दर पर किसानों को दिया जाएगा। लोन, किसानों के पक्ष में सरकार के निर्णय का सांसद ने स्वागत किया है।

**पहले 6 जिलों में योजना-** सांसद गजेंद्र पटेल ने बताया खरगोन, बड़वानी सहित अन्य 4 जिलों में योजना चालू की गई है। जिसमें अभी पूरे प्रदेश में 1.2 करोड़ कर्षक बैंक से जुड़े हुए हैं। जिसमें से 82 लाख किसानों को केसीसी दिया गया है। अभी यह फायदा 6 जिलों को दिया जाएगा।

# सीएम का निर्देश, किसानों से खरीदे धान का भुगतान तत्काल करें

जागत गांव हमार, भोपाल।

मुख्यमंत्री ने कहा है कि धान उपार्जन के लिए निर्धारित अवधि में जो किसान धान नहीं दे पाए हैं, उन शेष रहे किसानों से धान खरीदी जाए। धान उपार्जन में जिन कृषकों का भुगतान लंबित है, उनका त्वरित भुगतान सुनिश्चित करें। धान खरीदी में अनियमितता करने वाली सेवा सहकारी समितियों और स्व-सहायता समूहों पर कड़ी कार्रवाई की जाए। मुख्यमंत्री खरीफ विपणन वर्ष 2022-23 के उपार्जन की समीक्षा कर रहे थे। मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में हुई बैठक में खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री बिसाहूलाल सिंह, आयुक्त सहकारिता आलोक सिंह संचालक खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति दीपक सक्सेना तथा अन्य अधिकारी उपस्थित थे। जानकारी दी गई कि 6 लाख 46 हजार 279 कृषकों से 9 हजार 427 करोड़ 60 लाख की धान खरीदी गई, जिसमें से 10 हजार 319 कृषकों को 214 करोड़ 20 लाख का भुगतान प्रक्रिया में है। प्रदेश में 1542 उपार्जन केन्द्र हैं।

# आंवला के मूल्यवर्धित उत्पादों पर प्रशिक्षण

मंदसौर। कृषि विज्ञान केंद्र मंदसौर द्वारा एक दिवसीय सेवाकालीन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एसपी त्रिपाठी द्वारा विषय आंवला के मूल्यवर्धित विभिन्न उत्पादों के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी। प्रमुख रूप से आंवले के आंवला मुरब्बा, आंवला कैंडी, आंवला सुपारी खट्टी एवं मीठी को सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक तौर पर बनाना सिखाया गया। प्रशिक्षण में मंदसौर जिले की आंगनबड़ी कार्यकर्ता एवं सुपरवाइजर शामिल होकर लाभ लिया। आंवले के औषधीय गुणों का उपयोग ग्रामीण महिलाओं एवं कुपोषित बच्चों को खिलाकर कुपोषण को दूर कर सके। उक्त प्रशिक्षण में 22 आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं ने भाग लिया और कार्यक्रम को सफल बनाया। डॉ. अंकित पांडे उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर का प्रशिक्षण में सराहनीय सहयोग रहा।

-कृषि विपणन बोर्ड के संचालक मंडल की 139वीं बैठक, कृषि मंत्री ने अधिकारियों को दिए निर्देश

# किसानों को मंडी में कोई परेशानी न हो, इसका ध्यान रखें

जागत गांव हमार, भोपाल।

किसान-कल्याण तथा कृषि विकास मंत्री एवं अध्यक्ष मध्यप्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड कमल पटेल ने 21 मंडी समितियों में प्रस्तावित कृषक सभागृह और संगोष्ठी भवनों के निर्माण कार्य को समय-सीमा में पूरा करने के निर्देश दिए। मंत्री मंडी बोर्ड के संचालक मंडल की 139वीं बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। मंत्री ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि मंडियों को अत्याधुनिक बनाने के लिए सभी आवश्यक कार्रवाई की जाए। उन्होंने कहा कि कृषकों को मंडियों में किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। कृषक अपनी उपज को मंडी में बेहतर तरीके से विक्रय कर सके, इसके लिए उपयुक्त कार्य-योजना बनाएं।

**मंडी बोर्ड को मिली सराहना**- मंत्री पटेल ने कहा कि मंडी बोर्ड ने दिवंगत कर्मचारियों के प्रति संवेदनशीलता पूर्वक जिम्मेदारी का निर्वहन किया है। अब तक 181 दिवंगत कर्मचारियों के परिजन को अनुकम्पा नियुक्ति प्रदान कर नेक और अन्य विभागों के लिए अनुकरणीय कार्य किया है। उन्होंने मंडी बोर्ड द्वारा बेहतर कार्य किए जाने की सराहना की।

## पेमेंट गेटवे बनाने का प्रस्ताव पारित

**बैठक में मंडी समितियों में राशि के भुगतान की कार्रवाई के लिए पेमेंट गेटवे बनाने के प्रस्ताव सर्व-सम्मति से पारित किया गया। प्रदेश से निर्यात हुए गेहूं पर मंडी शुल्क प्रतिपूर्ति, कृषि निर्यात प्रकोष्ठ के कुशल संचालन के लिए सेवा प्रदाता की नियुक्ति, कृषि उपज मंडी समितियों के दैनिक क्रिया-कलापों को ई-मंडी सॉफ्टवेयर वेब पोर्टल के माध्यम से प्रवेश, अनुबंध एवं तौल प्रक्रिया को तत्समय ऑनलाइन संधारित करने और 21 मंडी समितियों में कलर सॉर्टेक्स प्लांट लगाने के प्रस्तावों पर सहमति व्यक्त की गई।**

## मंडियों में रिकॉर्ड उपज की आवक

बैठक में बताया गया कि 11 हजार 514 किसानों ने कृषि उपज मंडी में संचालित हो रहे एमपी फार्मगेट एप का उपयोग कर 45.22 लाख क्विंटल कृषि उपजों का विक्रय किया है। एमडी मंडी बोर्ड जीवी रश्मि ने बताया कि दिसम्बर माह तक प्रदेश की मंडियों में रिकॉर्ड 325 लाख मीट्रिक टन कृषि उपज की आवक हुई है। अपर मुख्य सचिव कृषि अशोक वर्णवाल ने अधिकारियों को मंडी बोर्ड अध्यक्ष एवं कृषि मंत्री द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन सुनिश्चित करने को कहा गया।

गेहूं में मिट्टी मिलावट पर नामजद एफआईआर

# गेहूं में मिट्टी मिलावट पर नामजद एफआईआर

जागत गांव हमार, भोपाल।

वेयर हाऊसिंग कॉर्पोरेशन ने सतना के रामपुर बघेलान स्थित साइलो बैग इंडिया प्रायवेट लिमिटेड द्वारा खाद्यान्न बेग्स में गेहूं के साथ मिट्टी की मिलावट किए जाने संबंधी प्रकरण में खाद्य विभाग की ओर से एफआईआर दर्ज कराई है। रामपुर बघेलान स्थित वेयर हाऊसिंग कॉर्पोरेशन के शाखा प्रबंधक सुरेश शर्मा ने गेहूं की पैकिंग का वजन बढ़ाने के लिए उसमें रेत, कंक्रीट और मिटटी मिलाए जाने के आरोप में 6 लोगों के विरुद्ध नामजद शिकायत दर्ज कराई है। आरोपियों में सायलो बैग इंडिया रामपुर बघेलान के शाखा प्रबंधक ज्योति प्रसाद, रामपुर बघेलान के आयुष कुमार पांडे, महेश नामदेव, गिरिश पाण्डेय, बाबूपुर सतना के ज्ञानेन्द्र कुशवाहा एवं पुष्पेन्द्र पाण्डेय शामिल हैं। इन 6 लोगों के विरूद्ध धोखाधड़ी एवं छलपूर्वक शासन की छवि धूमिल करने का प्रयास करने का प्रकरण पंजीबद्ध किया गया है। प्रकरण में भारतीय खाद्य निगम के अधिकारियों द्वारा 16 नग सेम्पल (बोरियों में पैकिंग के बाद संग्रहित गेहूं के स्टाक का पेरीफेरल नमूना) एकत्र किया गया, जिसके आधार पर नामजद व्यक्तियों के विरुद्ध प्राथमिक सूचना दर्ज कराई गई है।

## वीडियो हुआ था वायरल

**उल्लेखनीय है कि विगत दिनों सोशल मीडिया पर सरकारी गेहूं की पैकिंग का वजन बढ़ाने के लिए कंक्रीट और मिटटी मिलाने संबंधी वीडियो वायरल हुआ था। खाद्य विभाग के संज्ञान में आने के बाद वायरल वीडियो की जांच के लिए राजस्व, खाद्य, नागरिक आपूर्ति निगम, मध्यप्रदेश वेयर हाउसिंग एण्ड लॉजिस्टिक कॉर्पोरेशन और भारतीय खाद्य निगम के अधिकारियों की संयुक्त टीम बना कर जांच कराई गई।**

कृषि मंत्री ने वार्ड चौपाल में सुनी समस्याएं

# पात्रता अनुसार योजनाओं का लाभ दिलाएंगे

**भोपाल।** किसान-कल्याण तथा कृषि विकास मंत्री कमल पटेल ने कहा कि सरकार की योजनाओं की जानकारी देने और आमजन की समस्याओं का निराकरण करने के लिए हरदा जिले के नगरीय निकायों में वार्ड चौपाल की जा रही है। मंत्री ने हरदा शहर के वार्ड 1, 8 और 16 में आयोजित चौपाल में नागरिकों की समस्याएं सुनी। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार प्रत्येक नागरिक को पात्रता के अनुसार सरकार की योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए कृत-संकल्पित है। उन्होंने वार्ड चौपाल आयोजन के लिए कलेक्टर ऋषि गर्ग और जिला प्रशासन की टीम की सराहना की और टीम को बधाई दी।

## बिल सुधार के शिविर लगाएं

कृषि मंत्री ने विद्युत वितरण कंपनी के उप महाप्रबंधक आरके अग्रवाल को बिजली बिल सुधार संबंधी आवेदन के निराकरण के लिए प्रत्येक वार्ड में विद्युत बिलों के सुधार के लिए शिविर लगाने और नागरिकों को वास्तविक खपत आधारित बिजली के बिल देने के निर्देश दिए।

## 65 आवेदन निराकृत

कलेक्टर ने बताया कि वार्ड चौपाल में तीन वार्ड के कुल 92 नागरिकों से आवेदन प्राप्त हुए, जिसमें से 65 का मौके पर ही निराकरण कर दिया गया। चौपाल में संबल योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, बालिका समृद्धि योजना, सामाजिक न्याय, बिजली, नगरीय निकाय, आयुष्मान कार्ड, पात्रता पर्ची संबंधी आवेदनों का निराकरण किया गया।

जागत गांव हमार के सुधि पाठकों...

» जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि आगे भी मिलता रहेगा।

» समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूर्ण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।

» ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आग्रह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 94250485889

"आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, स्थानीय संपादक- **अरविंद मिश्र, संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)